फरीदाबाद
मजदूर समाचार

जीवन की लौ को सृजनात्मक तौर पर प्रचुर करने का एक माध्यम

'मजदूर समाचार' की कुछ सामग्री अंग्रेजी में इन्टरनेट पर है। देखें–
< http://faridabadmajdoorsamachar.blogspot.in >

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन.आई.टी. फरीदाबाद – 121001

नई सीरीज नम्बर 293 1/- नवम्बर 2012

एकमेव और एकमय

हम से मैं और मैं से नये हम की ओर

✶हर व्यक्ति हर समय बहुत कुछ करती है। क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें से हर व्यक्ति हर समय जूझता है। और फिर, समय-समय पर ऐसे हालात बनते हैं कि कई लोगों द्वारा मिल कर कुछ करना आवश्यक हो जाता है। पुनः वही प्रश्न, अधिक जटिलता लिये, हमारे सम्मुख होते हैं।

✶फैक्ट्रियों में उत्पादन कई लोगों द्वारा मिल कर किया जाता है। फिर, कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन करवाना मजदूरी-प्रथा के मूल सूत्रों में है। इसलिये मजदूरों को बद से बदतर होती स्थिति से रूबरू होना ही होता है। इसीलिये फैक्ट्री में हर समय अकेले-अकेले कुछ करने के संग-संग मजदूरों द्वारा मिल कर कुछ करना एक अनिवार्य आवश्यकता रहती है।

✶एकता में बल है – एकता रामबाण लगती थी (लगती है)। बीस वर्षों के दौरान फरीदाबाद में ही अनेक कठिनाइयों से पार पा कर अनेकों फैक्ट्रियों में मजदूरों ने एकता बनाने में सफलता प्राप्त की। और, इन सफलताओं ने एकता के रामबाण होने पर ही प्रश्न-चिन्ह लगा दिया। फैक्ट्री मजदूरों में से उभरे नेताओं के इर्द-गिर्द एकता बनती थी (बनती है)। मजदूरों में से उभरे अधिकतर नेता मजदूरों के पक्ष में डटे रहे और थोड़े ही समय में खुड्डे लाइन लगा दिये गये, कुचल दिये गये। मजदूरों में से उभरे कुछ नेता कम्पनी के पक्ष में हो गये और दीर्घ समय तक मजदूरों की छाती पर मूँग दलते रहे। "ईमानदार नेता मारे जाते हैं और बेईमान नेता बेच खाते हैं" वाले कटु अनुभवों ने कसम-वसम खाने को किनारे किया, ईमानदारी – बेईमानी के फर्क को हालात बदलने के सन्दर्भ में गौण बनाया। मिल कर क्या-कैसे करें का प्रश्न अधिक स्पष्टता से सामने आया।

✶एकता प्रतिनिधि की माँग करती है। "ईश्वर मर गया" की घोषणा प्राचीन एकताओं की मृत्यु का स्वीकार्य था। आज की एकता प्रतिनिधि-प्रणाली पर आधारित है। प्रतिनिधि चुनना 100 को 5 बनाने की राह है। प्रतिनिधि-प्रणाली आधारित एकता प्रत्येक के विशेष होने, एकमेव होने को नकारती है और "सब बराबर" की धारणा पर आधारित है। एकता-प्रतिनिधि-नेता ऐसे तौर-तरीके उभारते हैं, ऐसे अखाड़ों का निर्माण करते हैं जिनमें 95 प्रतिशत को अनुयायी में, श्रोता में बदला जाता है। वीर, विद्वान, मर्द, बलिदानी, वक्ता, पहुँचवाला, चलती है – विशेषण हैं प्रतिनिधि-नेता के और आर-पार की लड़ाई इनका तकियाकलाम। पिचानवे प्रतिशत को निष्क्रिय करना सार है एकता का और 95 प्रतिशत की निष्क्रियता आधार है एकता का। यह सामान्य जन की बढती सक्रियता होती है जो कि "एकता नहीं है" के विलाप के रूप में प्रकट होती है।

✶एकता को नाकारा और नुकसानदायक पाने से बात थम नहीं जाती। फैक्ट्री मजदूरों के लिये मिल कर अपने हित में कुछ करना अधिकाधिक जरूरी होता जाता है। आवश्यकता, अनिवार्य आवश्यकता राहें तलाशती है, राहें बनाती है। इस सन्दर्भ में फरीदाबाद में ***गेडोर (झालानी टूल्स)*** के मजदूरों के प्रयोगों को यहाँ एक अनुभव के तौर पर आइये देखें। फरीदाबाद में कम्पनी की तीन फैक्ट्रियों में बीस वर्षों के दौरान मजदूरों ने अतियों को झेला-भुगता-मुकाबला किया। यूनियन ने 1500 मजदूरों की छँटनी करने की कम्पनी की योजना को लागू करने में सक्रिय भूमिका अदा की। यूनियन नेताओं को मजदूरों के नकली प्रतिनिधि घोषित कर उनकी नकली एकता के खिलाफ असली प्रतिनिधियों के जरिये मजदूरों की सच्ची एकता के प्रयास हुये। नेता हटाये गये पर उनकी जगह बने नेता पुरानों जैसे ही रहे। नये-पुराने नेताओं और मैनेजमेन्ट-पुलिस ने मिल कर जबरन 1500 मजदूरों से इस्तीफे लिखवाये। प्रतिनिधि-नेता-एकता की जगह क्या? इसी कम्पनी की फैक्ट्रियों के मजदूरों की तनखा देरी से दिये जाने और फिर एक-दो-तीन-चार महीनों की तनखायें बकाया हो जाने ने नये सिरे से मिल कर कुछ करने को अरजेन्ट आवश्यकता बनाया। क्या करें? कैसे करें? गेडोर (झालानी टूल्स) के मजदूरों ने तालमेलों के प्रयोग किये। रोज-रोज एक के बाद दूसरी पाँच-पाँच, सात-सात की टोलियों में मजदूरों ने श्रम विभाग और प्रशासन की नाक में दम किया। मजदूरों में पुनः एकता स्थापित करने के लिये प्रशासन ने समझौते के लिये प्रतिनिधियों की माँग की। प्रतिनिधि मानी नेता – मजदूरों ने प्रशासन की माँग ठुकरा दी। मजदूर गत्तों पर अपनी बातें लिख कर शिफ्टें आरम्भ होने और शिफ्टें छूटने के समय सड़कों पर 10-15 की कतार बना दस-दस गज पर खड़े होने लगे और हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों से संवाद की राहें खोली। इस बढती बला से पार पाने के लिये चण्डीगढ में मीटिंग कर साहबों ने गेडोर (झालानी टूल्स) में यूनियन चुनाव करवा कर, नेता पुनः स्थापित कर 21 महीनों की तनखायें बकाया हो जाने के बाद मजदूरों को तनखायें देनी आरम्भ की। गत्तों पर अपनी बातें लिख कर कतार में सड़कों पर खड़े होते गेडोर (झालानी टूल्स) मजदूरों ने हजारों फैक्ट्रियों के मजदूरों से संवाद जारी रखे। कम्पनी बन्दी की राह पर।

✶तालमेल प्रत्येक को महत्व पर आधारित तो हैं ही, तालमेल बढती सँख्या की सक्रिय साँझेदारी को भी सुगम बनाते हैं। प्रत्येक की भिन्न-भिन्न मजबूरियों और अलग-अलग विशेषताओं के दृष्टिगत एक-दो की बजाय तालमेल अनेकों गतिविधियों को स्थान प्रदान करते हैं। अपनी इच्छा और सुविधा अनुसार हर व्यक्ति को इस अथवा उस, अब अथवा तब, इतना अथवा उतना करने की स्वतन्त्रता को तालमेल सुनिश्चित करते हैं। तालमेल 100 को 1,000 बनाने, 10,0000 बनाने की राहें प्रदान करते हैं। गेडोर (झालानी टूल्स) मजदूरों के तालमेलों के प्रयोगों से उपजे अनुभवों ने कम्पनी बन्द होने पर उन्हें नई राहें बनाने में सक्षम बनाया। फरीदाबाद में फैक्ट्री बन्द होने पर मजदूरों के हिसाब डूब जाना अथवा औने-पौने पैसे मिलना सामान्य रहा है। जूट मिल, इलेक्ट्रोनिक्स, ईस्ट इण्डिया कॉटन, नोरदर्न आयरन एण्ड स्टील, डेल्टा टूल्स, मैटल बॉक्स, नूकेम प्लास्टिक, हितकारी पोट्रीज, प्रताप स्टील, रेमिंगटन, अतुल ग्लास...... चन्द उदाहरण हैं एकता द्वारा कत्ल किये मजदूरों के। अनेक मामलों में तो प्रतिनिधि-नेता-यूनियन ने कानून अनुसार मजदूरों का जो हिसाब बनता था उसके भी दसवें हिस्से पर समझौता किया। गेडोर (झालानी टूल्स) यूनियन इसका नया उदाहरण है। कम्पनी बन्द होने पर तालमेलों के अनुभवों से गुजरे मजदूरों के सम्मुख फिर क्या करें और कैसे करें के प्रश्न थे। वकीलों और जजों के पूर्वाग्रहों से पार पाते इन मजदूरों ने अलग-अलग रहते हुये भी मिल कर कदम उठाये। बारह वर्ष बाद इसके सकारात्मक परिणाम आ रहे हैं। मुड़ कर देखते हैं तो व्यवहार में गेडोर (झालानी टूल्स) मजदूरों ने एकमेव और एकमय की राह पर कदम बढाये थे।

(बाकी पेज तीन पर)

फैक्ट्रियों में हालात की एक झलक

ट्रैक कम्पोनेन्ट्स मजदूर : "प्लॉट 21 सैक्टर-7 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में एक हजार से ज्यादा मजदूर सुबह 7 से साँय 5½ और साँय 5½ से अगली सुबह 5 बजे तक की दो शिफ्टों में ***हीरो, होण्डा, मारुति सुजुकी*** के तथा निर्यात के लिये साइलैन्सर बनाते हैं। रविवार को दिन में 8-10-12 घण्टे काम। पैकिंग विभाग में तो महीने में 200 घण्टे तक ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। स्टाफ में ही कुछ लोग स्थाई हैं, मजदूरों में एक भी स्थाई नहीं है। सात ठेकेदारों के जरिये 1000 मजदूर रखे हैं पर तनखा दो ठेकेदारों के जरिये दी जाती है। एक्सीडेन्ट बहुत होते हैं, हर समय 5-6 मजदूर मेडिकल पर रहते हैं। इस वर्ष 23 जुलाई को रात की शिफ्ट में 5 एक्सीडेन्ट हुये : ट्राली पलटने से एक मजदूर का हाथ टूटा, सी एन सी मशीन पर एक मजदूर की उँगली बुरी तरह टूटी, वैल्डशॉप में गर्म तेल से एक मजदूर का चेहरा तथा शरीर का ऊपरी हिस्सा जला, लोहे की शीट गिरने से एक मजदूर के पैर में चोट, स्क्रैप से एक मजदूर का पैर कटा — चार टाँके लगे। इससे पहले 10 जुलाई को पावर प्रेस में एक मजदूर का हाथ दबा, 45 मिनट दबा रहा, दर्द से चीखता रहा, अस्पताल में चार उँगली काटी गई। इस वर्ष जनवरी में एक ही दिन प्रेस शॉप में तथा लिफ्ट में ट्राली पलटी — दो मजदूरों के पैर टूटे, दोनों के राड डाली गई, एक का पैर 9 महीने बाद भी ठीक नहीं हुआ है। इधर 22 सितम्बर को पावर प्रेस पर एक मजदूर का दाहिना हाथ कलाई से पूरा कट गया। रात की शिफ्ट में 24 सितम्बर को सी एन सी मशीन पर एक मजदूर की चार उँगली कटी। फोर्क लिफ्टर से 25 सितम्बर को एक मजदूर का पैर टूट गया. .... उत्पादन का, काम का भारी दबाव, 10½-11½ घण्टे की शिफ्टें, हड़काना..... फर्श खराब होने के कारण ट्राली पलटती हैं, मेन्टेनैन्स में भारी कमी और सैन्सरों के काम नहीं करने के कारण पावर प्रेसों पर हाथ कटते हैं। फैक्ट्री में एम्बुलैन्स है पर उसका ड्राइवर नहीं है — एक्सीडेन्ट होने पर माल ढोने वाले ड्राइवरों का इन्तजार करना पड़ता है।"

हरसोरिया हैल्थकेयर श्रमिक : "110-111 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सब कैजुअल वरकरों को निकालने और बरखास्तगी तथा स्टाफ वाले बनाने के बाद बचे 180 स्थाई मजदूरों के साथ अब 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखे 250 मजदूर काम करते हैं। मार्च महीने में जिन्हें 6200 रुपये तनखा में भर्ती किया था उनकी तनखा मई में 5700 रुपये कर दी और फिर अगस्त में पुनः घटा कर 4846 रुपये कर दी। पहली जुलाई से देय महँगाई भत्ते के 120 रुपये भी नहीं दिये हैं। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की थी, ओवर टाइम 22 रुपये प्रतिघण्टा था, निर्धारित उत्पादन बढा कर इधर एक महीने से ओवर टाइम बन्द कर दिया है। काम का बहुत ज्यादा दबाव..... सूईयाँ चुभती रहती हैं, उँगली कटती रहती हैं, मशीन में हाथ दबते रहते हैं और फैक्ट्री में कोई दवा-पट्टी नहीं। गाली देते हैं। तनखा से ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और पी.एफ. नम्बर नहीं बताते। छोड़ने पर फण्ड के पैसे नहीं मिलते, 6 दिन किये काम के पैसे भी नहीं देते। तनखा हर महीने देरी से, सितम्बर की 16 अक्टूबर को दी।"

उषा डायरी कामगार : "प्लॉट 62, बी-ब्लॉक, ओखला फेज-1, दिल्ली स्थित फैक्ट्री में 90 मजदूरों की सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 4000 रुपये, इंकमैन की 5000, प्रिन्टिंग प्रेस ऑपरेटर की 7200 रुपये। ई.एस.आई. व पी. एफ. 10 मजदूरों के ही हैं।"

ब्राइट ब्रदर्स वरकर : "प्लॉट 16-17 सैक्टर-24, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 60-70 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 300 मजदूर ***व्हर्लपूल*** फ्रिज के प्लास्टिक के हिस्से बनाते हैं। तीन सौ मजदूरों में 200 की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। तनखा बढवाने के लिये 11 अक्टूबर को सुबह 6 बजे की शिफ्ट में ठेकेदारों के जरिये रखे सब मजदूर फैक्ट्री के बाहर रुक गये — 9 बजे तक कोई मजदूर अन्दर नहीं गया। कम्पनी ने 10-12 पहलवान बुलाये थे पर वे एक तरफ खड़े रहे। तनखा बढायेंगे कह कर साहब अन्दर ले गये। रिवाल्वर दिखाते 6-7 पहलवान फैक्ट्री में घूम रहे थे। दस बजे 10 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया। तीन रोज पहलवान फैक्ट्री के अन्दर रहे, कम्पनी वाले कह रहे थे कि पुलिसवाले हैं।"

एमटेक मजदूर : "प्लॉट 53-54 सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर स्थित फैक्ट्री में करीब 200 स्थाई मजदूर और ठेकेदारों के जरिये रखे 1000 मजदूर ***जोहन डियर, सोनालिका, जीटर, महिन्द्रा, आयशर*** ट्रैक्टरों की क्रैन्क, कॉन रोड, शाफ्ट; ***टाटा*** ट्रकों और ***होण्डा*** स्कूटर तथा मोटरसाइकिल की क्रैन्क; ***मारुति सुजुकी*** का हब; अनेक वाहनों के अनेक छोटे पुर्जे बनाते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ 2010 में ठेकेदार के जरिये लगा। इस वर्ष 19 जनवरी को फोर्क लिफ्ट पर 12 क्विंटल वजन ने मेरे दोनों पैर कुचल दिये। चोट लगने के बाद ई.एस.आई. कार्ड बनवा कर सैक्टर-3 स्थित ई.एस.आई. अस्पताल ले गये, भर्ती नहीं किया, दवाई-पट्टी कर वापस फैक्ट्री भेज दिया। एक्सीडेन्ट रिपोर्ट का पता नहीं। ई.एस.आई. ने कोई मेडिकल छुट्टी नहीं दी। मैनेजमेन्ट ने, ठेकेदार ने कोई छुट्टी नहीं दी। ड्युटी करता रहा — 4 दिन काम करता, पैर सूज जाते, 4 दिन छुट्टी कर लेता। बैठे के पैसे नहीं देते थे, काम करना ही पड़ता। इस तरह जून तक खींचा। इस बीच मार्च-अप्रैल में दवाइयों से दो उँगलियों की हड्डियाँ निकल गई — ऑपरेशन नहीं किया। जून में गाँव गया और भरतपुर में सरकारी अस्पताल में दिखाया — डॉक्टरों ने जयपुर में सवाई मान सिंह अस्पताल रेफर कर दिया। जयपुर में उपचार से आराम मिला है और दवा अब भी चल रही है। इधर 25 अक्टूबर को फैक्ट्री पहुँचा तो ठेकेदार के सुपरवाइजर ने नौकरी से मना कर दिया, बोला काम कम है।"

इनकास इन्टरनेशनल श्रमिक : "142 उद्योग विहार फेज-1, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 की ड्युटी है और जबरन रात 2-2½ बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से दिखाते हैं, हस्ताक्षर करवाते हैं, मीटिंग में बताते भी हैं पर देते सिंगल रेट से हैं। बोलते हैं कि 18 महीने में वेतन वृद्धि करेंगे पर करते नहीं — मजदूर काम बन्द कर देते हैं तब तनखा में 200-300 रुपये बढाते हैं..... और 6 महीने वाला महँगाई भत्ता गायब कर देते हैं। साहब बहुत बुरा बोलते हैं। यहाँ ***मैंगो, अरमानी*** के चमड़े के जैकेट, थैले बनते हैं।"

ओरियन्ट फैन कामगार : "प्लॉट 11 सैक्टर-6, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सी एफ एल विभाग में 25 स्थाई मजदूर और ठेकेदार के जरिये रखे 400 मजदूर 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में ट्यूब बनाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। गर्म काम है, काँच थाईलैण्ड से आता है। दो लाइन हैं और रफ्तार बहुत तेज है। एक लाइन पर 43 मजदूर चाहियें पर 33-35 मजदूरों से भी लाइन चलवा देते हैं। और, 12 घण्टे में ट्यूब 2 यू बनाने की क्षमता 24,000 है पर बनवाते 30,000 हैं, ट्यूब 3 यू 28,000 की जगह 36,000 बनवाते हैं। चाय के लिये समय नहीं, लाइन पर काम करते-करते पीओ। भोजन अवकाश के समय भी लाइनें चलती रहती हैं, बारी-बारी से भोजन करो। पानी पीने भी नहीं जा सकते। इंजीनियर बहुत चिल्लाता है, सुपरवाइजर पकड़ कर झिंझोड़ भी देते हैं। ठेकेदार के जरिये रखे मजदूरों को वार्षिक बोनस नहीं देते।"

एग्रो इंजीनियरिंग वरकर : "प्लॉट 22 सैक्टर-7 आई.एस.टी. मानेसर स्थित कम्पनी की यूनिट-II (यूनिट-1 फरीदाबाद में है) में सुबह 8 से रात 2-3 बजे की शिफ्ट है। छूटने पर मजदूर फैक्ट्री में ही सो जाते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। सुपरवाइजर सिर पर खड़े रहते हैं, शौचालय भी पीछे-पीछे पहुँच जाते हैं, गाली देते हैं। पावर प्रेस पर 11 जुलाई को एक मजदूर का हाथ कलाई से कटा। यहाँ से सप्लाई सीधी ***मारुति सुजुकी*** फैक्ट्री जाती है।"

आकृति क्रियेशन्स मजदूर : "410 उद्योग विहार फेज-3, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में स्टाफ के लोग ही स्थाई हैं, 500 मजदूर तीन ठेकेदारों के जरिये रखे हैं। महीने में 100-150 घण्टे ओवर टाइम, भुगतान सिंगल रेट से। हैल्परों की तनखा 4847 रुपये, जुलाई से देय डी.ए. के 120 रुपये नहीं दिये हैं। और, धागे काटने वाली 50 महिला मजदूरों की तनखा 4500 रुपये। तनखा और ओवर टाइम में गड़बड़ (बाकी पेज तीन पर)

●1 अक्टूबर 2012 से ***दिल्ली सरकार*** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन: अकुशल श्रमिक को मासिक 7254 रुपये (8 घण्टे के 279 रुपये); अर्धकुशल श्रमिक को मासिक 8008 रुपये (8 घण्टे के 308 रुपये); कुशल श्रमिक को मासिक 8814 रुपये (8 घण्टे के 339 रुपये)। एक पता: श्रम आयुक्त, दिल्ली सरकार 5 शाम नाथ मार्ग, दिल्ली-110054 ●***हरियाणा सरकार*** द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन 1.7.2012 से : अकुशल मजदूर (हैल्पर) 4967 रुपये ; उच्च कुशल मजदूर 5617 रुपये। एक पता: श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार, 30 बेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ।

निमन्त्रण

आज विश्व के सात अरब लोग कई तानों-बानों से जुड़े हैं। यह समय बहुत-ही बड़े परिवर्तनों का दौर है। आज छोटे से छोटी बात जंगल की आग का चरित्र लिये है। इस सिलसिले में एक कदम के तौर पर हम बातचीतों के लिये यह निमन्त्रण दे रहे हैं। प्रत्येक माह के अन्तिम रविवार को मिलने का हम प्रयास करेंगे। नवम्बर में 25 तारीख वाले रविवार को मिलेंगे। सुबह 10 से देर साँय तक अपनी सुविधा अनुसार आप आ सकते हैं। फरीदाबाद में बाटा चौक से थर्मल पावर हाउस होते हुये रास्ता है, पाँच-सात मिनट की पैदल दूरी है।

हकलाना-काब्बा बोलना कोई झिझक की बात नहीं है। टुकड़ों में ही बातों के बारे में बेफिकर रहिये। तारतम्य का अभाव, छूटी कड़ी-लड़ी-डँका बातचीतों में बाधक नहीं होंगे। टेढेपन, गतिशील टेढेपन से पार पाने के लिये सात अरब लोगों के बीच बातचीतों को बहुत बढाने की आश्यकता है।

क्या करें और क्या नहीं करें, कैसे करें और कैसे नहीं करें हमारे लिये महत्वपूर्ण हैं। इस सन्दर्भ में प्रत्येक के अनुभव व विचारों का स्वागत है। एक अनुरोध : कृपया वाक्‌युद्ध से बचने की कोशिश कीजिये ; चर्चाओं को-बहस को समेटने-समाप्त करने के प्रयास मत कीजिये; आदरपूर्ण और आनन्दपूर्ण बातचीत की कोशिश करें। यह बातचीतें मुख्यतः व्यवहार, बेहतर व्यवहार के लिये हैं।

मजदूर हितैषी मजदूर ....(पेज चार का शेष)

निमन्त्रण है : **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन के सदस्य बनें। "समय नहीं है" के इस दौर में कुछ समय देना सदस्यता की अनिवार्य शर्त है। संगठन किसी भी संस्था से कोई आर्थिक योगदान नहीं लेगा इसलिये संगठन का सदस्यता शुल्क पाँच रुपये होगा और मासिक आर्थिक योगदान स्वैच्छिक।

9. सदस्यों की सँख्या और सक्रियता आगे चल कर संगठन की गतिविधियाँ निर्धारित करेगी। इस बीच तीन संयोजक और मित्र अपनी क्षमता अनुसार प्रत्येक मजदूर और मजदूर समूह को कानून से परे शोषण के खिलाफ कदम उठाने में सहयोग करेंगे।

मजदूर हितैषी मजदूर संगठन का अस्थाई कार्यालय मजदूर लाइब्रेरी, ऑटोपिन झुग्गी, एन आई टी फरीदाबाद- 121001 है। फोन : 0129-6567014

1. प्रताप सिंह, संयोजक : हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड के कर्मचारी रहे हैं और अब वकालात करते हैं, मुख्यतः कर्मचारियों के केस लड़ते हैं। फोन : 9818772710

2. जवाहर लाल, संयोजक : पोरिट्स एण्ड स्पैन्सर (वॉयथ) फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब श्रम न्यायालय में मजदूरों के केस लड़ते हैं। फोन : 9810933587

3. सतीश कुमार, संयोजक : गुडईयर टायर फैक्ट्री के मजदूर रहे हैं और अब "मजदूर मोर्चा" के सम्पादक हैं। फोन : 9999595632

एकमेव और एकमय.......(पेज एक का शेष)

उपरोक्त उदाहरण तब का है जब फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य में नब्बे-पिचानवे प्रतिशत मजदूर स्थाई मजदूर होते थे। उस दौरान एकता का नारा ज्यादा शोर करता था। आज फैक्ट्रियों में उत्पादन कार्य करते अधिकतर मजदूर अस्थाई मजदूर हैं। आज एकता का नारा स्थाई मजदूरों द्वारा जब-तब लगाया जाता है, मन्द ध्वनि का वातावरण है। इलेक्ट्रोनिक्स के उत्पादन में प्रवेश ने और बहुत-कुछ भी बदला है। लगता है कि तालमेलों के अनुभव आज और भी महत्वपूर्ण बन गये हैं।

एकमेव और एकमय को अँग्रेजी में unique and together कहेंगे। (जारी) ◆

फैक्ट्रियों में हालात.......(पेज दो का शेष)

कर हर महीने 200 से 1000 रुपये खा जाते हैं। ई.एस.आई. तथा पी.एफ. राशि तनखा से काटते हैं पर नौकरी छोड़ने पर मजदूरों को फण्ड के पैसे नहीं मिलते। यहाँ ***मिग्रोज, सोनाई, बाटा, एलेन्स*** आदि के वस्त्र तैयार होते हैं।" ***सुपर इंजीनियरिंग श्रमिक :***"ओरियन्टल स्पन पाइप (500 बीघा) सैक्टर-25, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 7 की ड्युटी है और जबरन रात 1 बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। यहाँ 80 मजदूर ***एस्कोर्ट्स*** ई सी ई एल की केबिन, हाइड्रा के डीजल टैंक, हाइड्रोलिक टैंक आदि बनाते हैं। हैल्परों की तनखा 4200 रुपये। ई. एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर की नहीं हैं। तनखा 15 तारीख को। नौकरी छोड़ने पर 15-20 दिन किये काम के पैसे नहीं देते। गाली देते हैं।" ***सान इन्टरनेशनल वरकर :***"257 उद्योग विहार फेज-4, गुड़गाँव स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों जरिये 1500 मजदूर रखे हैं- पता ही नहीं चलता कि स्थाई मजदूर कोई है अथवा नही। सुबह 9½ से रात 10 बजे की शिफ्ट रोज है और रात 1½ बजे तक रोक लेते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से।.... यहाँ ***न्यू लुक, निल, वोग्ले*** के वस्त्र तैयार होते हैं।"

विचारणीय

✱ पिछले एक वर्ष में 36,073 करोड़ रुपये की सकल आय वाली ***आई टी सी लिमिटेड*** के अध्यक्ष ने 27.7.2012 को कम्पनी की 101 वीं वार्षिक महासभा में कहा : "आई टी सी में 'मूल्य वर्धन' के प्रत्येक रुपये पर लगभग 74% हिस्सा राजकोष में जाता है। पिछले 10 वर्षों में, उत्पाद शुल्क, आयकर, लाभांश वितरण कर, मूल्यवर्धित कर (VAT), प्रवेश कर, चुंगी एवं अन्य राज्य प्रभार से संश्लिष्ट करों के रूप में सरकारी राजकोष में लगभग 1, 00, 000 करोड़ रुपये की संचयी राशि जमा हो चुकी है। भारत में सूचीबद्ध निजी क्षेत्र की कम्पनियों में आई टी सी सबसे अधिक कर अदा करने के मामले में तीसरे नम्बर पर आती है।"

और, सब सरकारी टैक्स देने के बाद पिछले एक वर्ष में आई टी सी कम्पनी का शुद्ध लाभ 6,162 करोड़ रुपये रहा। आई टी सी कम्पनी द्वारा लिये कर्ज और उस पर दिये ब्याज की जानकारी नहीं है।

सरकारों, बैंक-वित्तीय संस्थाओं और कम्पनियों के रहते हुये क्या मजदूरों की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है? सरकारों, बैंकों और कम्पनियों के रहते उपभोक्ताओं को सामान सस्ता मिल सकता है क्या?

✱ ***टाटा*** समूह की कम्पनी ***वोल्टास लिमिटेड*** में 600 स्थाई मजदूर, ठेकेदारों के जरिये रखे 8000 मजदूर और स्टाफ के 3000 लोग हैं। स्टाफ वाले कई लोग मजदूरों वाला काम करते हैं। वोल्टास की फैक्ट्रियों में 15 वर्ष पहले 5000 स्थाई मजदूर थे। (जानकारी 'मजदूर एकता लहर' के 16-31 अक्टूबर अंक से)

ई. एस. आई.

ई.एस.आई. डिस्पैन्सरी-अस्पताल कर्मचारी-अधिकारी कहते थे कि फोटो वाला कार्ड नहीं चलेगा, स्मार्ट कार्ड लाओ। स्मार्ट कार्ड बनवाया। अब ई.एस.आई. डिस्पैन्सरी कासनवाला और ई. एस.आई. अस्पताल, सैक्टर-3 आई.एम.टी. मानेसर के कर्मचारी-अधिकारी कहते हैं कि स्मार्ट कार्ड नहीं चलेगा, रंगीन फोटो के साथ कार्ड बनवा कर लाओ।

पत्र

.......पढे-लिखे रिटायर्ड लोग जानते बहुत हैं; परन्तु ये सोचते नहीं हैं। सूचनाओं पर बहसते हैं। मर्म के प्रति बेहद सतही बातें कहते हैं। भावना-धारणा को आत्मसात नहीं करते। नामों/आँकड़ों को पेश करने में जीत-हार तक सीमित रहते हैं, यानी, सूचना के स्रोत से आगे कुछ नहीं। लाश की तरह अकड़े हैं। जीवन्तता का लक्षण लचलशीलता गायब है। बूढा सत्तर साल पहले के क्षण पर अटका है। इस दौरान सोच के बदलाव के स्वीकार से काँप जाते हैं। यहीं हठ उभरती है - लाश की अकड़न व ठण्डापन।....

— राजबल, मुजफ्फरनगर, 25.10.2012

महीने में एक बार छापते हैं, 10,000 प्रतियाँ निशुल्क बाँटने का प्रयास करते हैं।

जुड़ने-जोड़ने के लिये
मजदूर हितैषी मजदूर

लक्षय है : मजदूरों की सक्रियता बढाने में योगदान देना
सदस्य बनें, सहयोगी बनें

जो मजदूर इन मामलों को उठाना चाहते हैं: 1. सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन नहीं देना; 2. आठ से ज्यादा घण्टे काम करवाना और ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से नहीं करना; 3. स्थाई काम के लिये अस्थाई मजदूर रखना; 4. कानून द्वारा निर्धारित समय पर तनखा नहीं देना; 5. ई.एस.आई. कार्ड नहीं देना; 6. पी.एफ. नम्बर नहीं बताना, पी.एफ. की रसीद नहीं देना, फण्ड निकलवाने का फार्म नहीं भरना, फार्म जमा करवाने के बाद महीने के अन्दर पी.एफ. कार्यालय द्वारा भुगतान नहीं करना; 7. एक्सीडेन्ट होने पर एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरना; 8. अन्य.......

*अकेले अथवा समूह में इन सवालों को उठाने वाले मजदूर संगठन से सम्पर्क करें। "अकेले क्या कर सकते हैं ?" का एक उत्तर **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन से जुड़ने में है।*

*कानूनों के उल्लंघन को उजागर करना स्वयं में एक दबाव लिये है। **मजदूर हितैषी मजदूर** संगठन सम्बन्धित विभागों में हर स्तर पर मामलों को उठायेगा। संगठन सभी विकल्पों का इस्तेमाल करेगा।*

1. कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की।

2. कानून अनुसार शोषण मुख्य तरीका है शोषण का। आज से डेढ सौ-पौने दो सौ वर्ष पहले भाप-कोयले वाली मशीनों के समय मजदूर काम के आधे समय में अपनी दिहाड़ी पैदा करते थे और बाकी का आधा समय फैक्ट्री संचालकों का मुनाफा पैदा करता था। भाप-कोयले की मशीनों के दबदबे के दौरान शोषण की दर एक सौ-दो सौ प्रतिशत थी। आज इलेक्ट्रोनिक्स वाली मशीनों के दौर में मजदूर आठ-दस मिनट के काम द्वारा अपनी दिहाड़ी पैदा कर देते हैं। आज शोषण की दर तीन हजार-चार हजार प्रतिशत है। ..... आज मजदूर जो पैदा करते हैं उसके आधे से ज्यादा हिस्से, पचास प्रतिशत से अधिक को सरकारें टैक्सों के रूप में वसूल करती हैं। आज मजदूर जो उत्पादन करते हैं उसका एक-डेढ प्रतिशत हिस्सा ही मजदूरों को मिलता है। यह मजदूरों की आर्थिक दुर्दशा का मुख्य कारण है और इसकी समाप्ति के लिये मजदूरी-प्रथा का उन्मूलन एक अनिवार्य आवश्यकता है।

3. वह राजाओं का अन्तिम दौर था जब राजा खुद ही अपने कानूनों को तोड़ने लगे थे। आज कानूनों का उल्लंघन सामान्य है और कानूनों का पालन अपवाद की श्रेणी में है। हम बहुत बड़े परिवर्तन के दौर में हैं। ज्यादा से ज्यादा मजदूरों की सक्रियता बहुत-ही जरूरी है अन्यथा बर्बादी हमारे सामने मुँह बाये खड़ी है।

4. इन हालात में कानून से परे शोषण के खिलाफ एक और संगठित प्रयास के तौर पर फरीदाबाद में हम ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन का गठन कर रहे हैं।.......

8. ***मजदूर हितैषी मजदूर*** संगठन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हम सदस्य बनने की अपील कर रहे हैं। जो मजदूर दिन काटने की बजाय जीवन जीने के प्रयास करना चाहते हैं उन्हें हमारा **(बाकी पेज तीन पर)**

फैक्ट्री रिपोर्ट
जे सी बी

जे सी बी मजदूर : "23/7 मथुरा रोड़, फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में 375 स्थाई मजदूर, 600-625 कैजुअल वरकर, 40-45 ठेकेदारों के जरिये रखे 970-980 मजदूर और 400-410 स्टाफ के लोग काम करते हैं। स्टाफ कहे जाने वाले लोगों में कभी दो, कभी तीन शिफ्टों में 16 सी एन सी मशीनें चलाने वाले ऑपरेटर भी हैं।

"मेन असेम्बली लाइन में सुबह 8 से साँय 5½ की एक शिफ्ट है और शनि तथा रवि की छुट्टी। शिफ्ट में पहले 40 गाड़ी बनाते थे, फिर 65 की, अब 85 बनाते हैं, और जनवरी से 95 बनानी होंगी। सन् 2011 में दिन में 100 गाड़ी बनाने पर 4 घण्टे ओवर टाइम बनता था, 2012 में 115 गाड़ी बनाने पर 4 घण्टे ओवर टाइम बनता है, 2013 में 125 गाड़ी बनाने पर 4 घण्टे ओवर टाइम बनेगा। ऐसा मैनेजमेन्ट और यूनियन के बीच समझौता है। एक 3 डी एक्स जे.सी.बी. गाड़ी 18-19 लाख रुपये की। स्थाई मजदूरों के संग कैजुअल वरकरों तथा ठेकेदारों के जरिये रखे काफी मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान दुगुनी दर से है और यह एक आकर्षण है। ऐसे में ओवर टाइम नहीं होना बहुत कम तनखा में काम करते मजदूरों की परेशानी बढायेगा। ओवर टाइम नहीं होने से स्थाई मजदूरों को भी दिक्कत होती है। वैसे, स्थाई मजदूरों में 40 के करीब को ज्यादा मुलायम रखने के लिये ओवर टाइम जोड़ कर हर महीने कुल 90-95, 000 रुपये बन जाते हैं (एक के एक महीने 1, 39, 000 रुपये बने)। मेन असेम्बली में ओवर टाइम कम रहता है और यहाँ स्थाई मजदूर की तनखा 45-55, 000 रुपये है। असेम्बली में सितम्बर में ओवर टाइम नहीं था, अक्टूबर में 40 घण्टे ओवर टाइम रहा तब स्थाई मजदूरों के महीने में 70-80,000 रुपये बने। नवम्बर में रोज 115 गाड़ी बनेंगी, हर मजदूर का रोज ओवर टाइम होगा – इसे सरकारी ओवर टाइम कहते हैं।

"कैजुअल वरकर कुशल मजदूर होते हैं। छह महीने के लिये ही रखते हैं और फिर 6 महीने के ब्रेक के बाद ही दुबारा रखते हैं। कई मजदूर कई बार यहाँ काम कर चुके हैं। थोड़ी-सी गलती पर झाड़ पड़ती है। तनखा 6200, 6800, 7500 रुपये। मेन असेम्बली लाइन पर ओवर टाइम बहुत कम होता है और यहाँ नये, बिना सिफारिश वाले कैजुअल वरकर लगाये जाते हैं। होल्डिंग लाइन, टैस्टिंग लाइन, फैब्रिकेशन में वर्ष में कुछ महीनों को छोड़ कर ओवर टाइम लगता है। यहाँ जगह बदल देते हैं – वैल्डर को बफिंग, चिपिंग, ग्राइंडिंग, क्रेन से लोडिंग-अनलोडिंग में लगा देते हैं। फैक्ट्री में कोई बफरमैन नहीं है – एक शिफ्ट में 16 फ्रेम की बफिंग, गर्दा बहुत ज्यादा, सामान्य मास्क देते हैं जिसे बेकार ही समझिये, घुटन होती है और खाँसने पर काला निकलता है। स्थाई मजदूरों को कीमती मास्क-हैड स्क्रीन देते हैं जिसमें पीठ के पीछे से फिल्टर लगी पाइप से साँस की हवा आती है – और, कोई भी स्थाई मजदूर बफिंग नहीं करता, वैल्डिंग ही करते हैं। कैजुअल वरकरों को दिवाली पर कम्पनी उपहार नहीं देती।

"ठेकेदारों के जरिये रखे 970-980 मजदूरों में ढाई-तीन साल से लगातार काम कर रहे करीब 250 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में प्रवेश के समय ई.एस.आई. कार्ड दिखाना पड़ता है, नहीं होने पर गार्ड रोक देते हैं, सेक्युरिटी अफसर फोन पर कहता है अन्दर आने दो। स्टाफ, स्थाई मजदूर, कैजुअल वरकर का प्रवेश गेट नम्बर 1 से और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों का गेट नम्बर 2 से – इस वर्ष जनवरी से मार्च के दौरान तो बड़ी सँख्या में बिना ई.एस.आई. के मजदूरों को गेट नम्बर 4 से अन्दर लेते थे। वैसे, फैक्ट्री में सामग्री आती नहीं और बिल की इन्ट्री हो जाती है का खेल भी लगातार चलता है। जे सी बी फैक्ट्री से बाहर सैंकड़ों फैक्ट्रियों-वर्कशॉपों में जे सी बी के हिस्से-पुर्जे बनते हैं।

"मशीन मेन्टेनैन्स, फोर्क लिफ्ट ड्राइवर, बिजलीकर्मी, पेन्ट शॉप वरकर ...... ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में सबसे ज्यादा खराब हाल पेन्ट शॉप वरकरों का है। सुबह 7 से 3½ और साँय 3½ से रात 11½ की दो शिफ्ट हैं। स्टाफ ऑफिस में बैठा रहता है और स्थाई मजदूर काम करवाते है, पेन्ट शॉप में सब काम ठेकेदार के जरिये रखे मजदूर करते हैं। तनखा हर महीने देरी से, 20 तारीख के बाद और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों में सेक्युरिटी गार्ड, पेन्ट शॉप वरकर, चिनाई मजदूर, पानी से जुड़े मजदूरों को ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से (इन मजदूरों का ओवर टाइम दिखाते ही नहीं) और बाकी को (कैन्टीन वरकरों समेत) दुगुनी दर से। फैक्ट्री में सप्लाई का पानी नहीं आता, टैंकरों और ट्रैक्टर ट्राली से पानी आता है – सीवर भी नहीं है, दो टैंकर गन्दे पानी को फैक्ट्री के बाहर बहुत बड़े खाली प्लॉट (अमिताभ बच्चन का बताते हैं) में डालने में 24 घण्टे लगे रहते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे कुछ मजदूरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट, साप्ताहिक अवकाश नहीं, और 12 घण्टे रोज ड्युटी पर 30 दिन के 7500 रुपये।

"कदम-कदम पर दुभान्त-भेदभाव जे सी बी कम्पनी के चरित्र में भी है। कैजुअल वरकरों और ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों की एक कैन्टीन है। स्टाफ और स्थाई मजदूरों की दूसरी कैन्टीन है। भोजन में सौ गुणा फर्क।"◆

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे0 के0 आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–551 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73/12-14